Sanvahak, Vol.-1; Issue-1 (July-Sept.) 2025 : PP-91-96

प्रवेशांक Online

संवाहक

साहित्य, समाज और संस्कृति की त्रैमासिक पत्रिका

Vol.-1; Issue-1 (July-Sept.) 2025

Page No.- 91-96

©2025 **Sanvahak**

https:// sanvahak.gyanvividha.com

लेखक :

डॉ. सुरिन्द्रपाल कौर

सहायक प्राध्यापक, सैंटर फॉर डिस्टेंस एण्ड आनलाइन, ऐजुकेशन, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, (पंजाब).

Corresponding Author :

डॉ. सुरिन्द्रपाल कौर

सहायक प्राध्यापक, सैंटर फॉर डिस्टेंस एण्ड आनलाइन, ऐजुकेशन, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, (पंजाब).

उषा राजे सक्सेना की कहानियों में संवेदना के विविधपक्ष
('प्रवास में' कहानी संग्रह के विशेष संदर्भ में)

उषा राजे सक्सेना एक सुप्रसिद्ध प्रवासी हिन्दी साहित्यकार हैं। इंग्लैण्ड को कर्मभूमि बनाकर प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों में इन्होंने काफी सक्रियता रखी है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति, भाषा इत्यादि विषय इनकी कहानियों में मुख्य रूप से जुड़े रहते हैं। 'प्रवास में' कहानी-संग्रह से संबंधित अपनी बात में वे स्वयं लिखती हैं- "ये कहानियाँ भारतीय मूल्यों और मान्यताओं के चैखटे में संभवतः सही नहीं बैठेंगी, परन्तु इन मूल्यों और मान्यताओं के कारण ही एक परिवेश का साहित्य दूसरे परिवेश के साहित्य से अलग नहीं हो जाता। इन कहानियों के भीतर रिसी हुई गहरी मानवीय संवेदना उन्हें एक-दूसरे से जोड़े रखती है। सात समुंदर पार होने पर भी यही मानवीयता इन कहानियों को समयातीत कालेतर और समय सापेक्ष बनाती है।"[1]

प्रवासी भारतीयों के भारत के साथ सम्बन्धों को मजबूत बनाने का कार्य उषा राजे सक्सेना ने अपने साहित्य के माध्यम से बखूबी किया है। सन् 1967 में ब्रिटेन आई उषा राजे सक्सेना का कहानी संग्रह 'प्रवास में' सन् 2002 में ज्ञान गंगा दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ। इनकी कहानियाँ युग और परिवेश की सच्ची पहचान दर्शाती हुई पाठक के मन में संवेदना जगाती हैं। कहानियाँ 'घटनाओं के माध्यम से अत्यन्न गहरे प्रवासी यथार्थ बोध का मनोवैज्ञानिक परिचय देती हैं।' इनकी कहानियों के विषय में और अधिक जानने से पहले 'प्रवास' और प्रवासी साहित्य के विषय में जानकारी प्राप्त कर लेना भी आवश्यक है।

साधारण शब्दों में प्रवास का अर्थ है-अपने घर से दूर कुछ समय के लिए या हमेशा के लिए चले जाना या बस जाना। प्रवास प्रकृति का नियम भी है। आज हजारों लाखों की संख्या में भारतीय प्रवास कर रहे हैं अर्थात् अपना घर, अपनी जन्मभूमि छोड़कर दूसरे देशों में स्थायी वास कर रहे हैं। 'प्रवास' संस्कृत का शब्द है। वामन शिव राम आप्टे लिखते हैं

"प्रवास (प्र+वर+घञ्) विदेशागमन, विदेश यात्रा, घर पर न रहना, परदेश निवास।"[2]

"प्रवासी वे लोग हैं जो अपना देश छोड़कर बेगाने देश अनिश्चित समय के लिए चले जाते हैं पर दूसरे देश मे बस जाने का फैसला कर लेते हैं। प्रवासी की स्थित अनिश्चित होती है क्योंकि वह वापिस लौटने का फैसला भी कर सकता है।... विदेशों में स्थायी तौर पर बस जाने वाले को प्रवासी कहा जाता है।"[3]

यहां 'प्रवासी' जब अपनी भावनाओं को लेखनी के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं तो उनके द्वारा लिखा गया साहित्य 'प्रवासी साहित्य' कहलाता है। प्रवासी साहित्य की परम्परा काफी पुरानी है। विदेशी धरती पर रहकर भी अपनी मातृभूमि को अपने मन से न भूला पाने के कारण इससे जुड़े हुए हैं। अर्चना पेन्यूली, सुषम बेदी, सुधा ओम ढींगरा, नीना पॉल, उषा वर्मा, शैलजा सक्सेना, अनीता शर्मा और उषा राजे सक्सेना जैसी लेखिकाओं को 'भूमंडलीकरण के हाहाकार में बढ़ती यांत्रिकता और मनुष्य की संवेदनहीनता ने अंदर से झकझोर दिया है; जिससे इन्होंने अपनी जड़ों को मजबूत बनाते हुए मन की अथाह गुफा में भारतीय मूल्यों का पूनर्मूल्यांकन एवं पुर्नस्थापित करने के साथ-साथ प्रवासी जीवन को अभिव्यक्ति प्रदान की।'

उषा राजे सक्सेना हिन्दी की एक ऐसी लेखिका हैं, जिन्होंने प्रवासी समाज को आधार बनाकर अपने साहित्य की रचना ही। प्रवासी जीवन से संबंधित विभिन्न समस्याओं को उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया। इनकी सभी कहानियों के विषय एक-दूसरे से भिन्न है। उनमें विविधता देखी जा सकती है।

'प्रवास में' कहानी-संग्रह की प्रथम कहानी 'प्रवास में' कहानी के नायक शशांक के विदेश में आने से लेकर वहाँ पर नौकरी ढूँढने, विदेशी भाषा पर पकड़ मजबूत करने, मेहनत के द्वारा हासिल की गई उच्च पदवी से लेकर नौकरी से निलंबित होने की संपूर्ण घटनाओं को बहुत ही स्वाभाविक ढंग से प्रस्तुत किया है।

परायी धरती पर उसे कई अनुभव होते हैं। विदेशी धरती पर सफल जीवनयापन करने के लिए वह वहाँ के 'अदब कायदे, रीति-रिवाज तथा मनोभावों के बारे में गहराई से जानने का इच्छुक था किन्तु उसे इस बात का भी दुख था कि कई बार रंग और नस्ल पर भी करारे व्यंग्य और तानेबाजी हो जाती है।"[4] नस्लवाद को लेकर शशंक बहुत चिंतित था। ऑफिस में उसके लगातार बढ़ रहे वर्चस्व के कारण सहकर्मी उससे ईष्र्या करने लगे थे। "कुछ काहिल और जाहिल अंग्रेज भी ऐसे थे जो उसे ब्लडी ब्रेन बॉक्स, 'ब्लडी- वर्कोहलिक, ब्लडी इंडियन नो-हाऊ और 'बास्टर्ड' कहकर अपनी भड़ास निकालते हैं।"[5]

शशांक के बढ़ते कदमों को रोकने के लिए उसके साथ धोखा किया जाता है। उसके सहकर्मी छल का सहारा लेते हुए उसके विरूद्ध 'इनक्वाइरी' करवाते हैं। शशांक की पत्नी के अनुसार, "उनकी वरिष्ठता, प्रतिभाशक्ति का आयाम और उसका समुचित प्रयोग जो पहले उनके गुण थे। बाद में वही उनके अंग्रेज सार्थक और अधिकारियों की आँख की किरकिरी बन गई। संभवतः वह लोग उसकी बुद्धि और जानकारियों से भयभीत हो उठे।"[6]

शशांक अत्यन्त दुखी और हताश होकर संसार से विरक्त और विमुख होकर मन की शांति के लिए तिब्बत बौद्ध-भिक्षुओं के पास चला जाता है। कढ़ी मेहनत से शशांक ने जो नौकरी प्राप्त की थी उसे पल भर में ही 'वेतन सहित विलंबित' कर दिया गया है। लेखिका ने इस कहानी के माध्यम से प्रवासी जीवन को विभिन्न चुनौतियों को उजागर किया है। पश्चिम समाज में भारतीय शिक्षा को कोई महत्व नहीं दिया जाता। प्रवासी भारतीयों को अपनी शिक्षा के कारण नस्लवाद का सामना करना पड़ता है। भेदभाव की नीति के चलते भारतीयों का आत्म विश्वास तोड़ा जाता है और बेगानेपन का अहसास करवाया जाता है।

'शुकराना' कहानी में शुकराना नामक लड़की जिसकी आयु मात्र बारह-तेरह वर्ष होगी अपने देश से विस्थापित होकर दूसरे देश में अपनी माँ-बाप एक छोटे भाई, छोटी बहन के साथ बड़ी ही बेबसी मे जीवन यापन कर रही है। उसकी माँ बच्चों का पेट पालने के लिए अपना जिस्म बेचती है। पिता पिता के नाम पर कलंक है और माँ से ही

पैसे माँगता रहता है। बोसनिया और सर्ब के बीच युद्ध के कारण यह परिवार इंग्लैण्ड में शरण लेने को विवश है। वह लेखिका को बताती है "मैंने इस छोटी सी उम्र में दुनिया की गज़ालत देखी है। युद्ध की विभीषिका देखी है। इंसान को दरिंदा होते देखा है। कान फाड़ने वाले तोप-गोले, बंदूक, लाशें, खून से रंगी धरती, बलात्कार, घृणा-प्रेम, जन्म-मरण सब एक साथ देखे हैं।"[7]

दोनों भाई-बहन लेखिका के संपर्क में आते हैं। लड़की और उसके परिवार को अंग्रेजी भाषा का ज्ञान न होने के कारण उन्हें दूसरों से संपर्क करना अत्यन्त कठिन लगता है। अंग्रेजी भाषा के अल्प ज्ञान के कारण प्रवासी भारतीय हीन-भावना का शिकार हो जाते हैं। शुकराना लेखिका को अपने भाई के विषय में बताती है कि "उसे अंग्रेजी नहीं आती और वहाँ कोई बोसनियत नहीं जानता। लोग उसे गूँगा, बेवकूफ और पागल समझते हैं लड़के उसे मारते हैं।"[8]

लेखिका उसकी बातों से बहुत प्रभावित होती है। उसके प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए जीवन में दृढ़ संकल्प के साथ कड़ी मेहनत करने की प्रेरणा उसे देती है जिसे समझकर शुकराना पढ़ लिख कर 'डस्ट-कार्ट ड्राइवर' भाई 'बस कंडकटर' बन कर आत्मसम्मान के साथ जिन्दगी जीते हैं।

'यात्रा में ... कहानी के नायक से लेखिका की भेंट एक यात्रा के दौरान होती है। कुछ ही समय में स्थापित बेहद प्रेम भरे सम्बन्ध और उस यात्री के जीवन की विडंबनाओं के प्रति लेखिका ने अपनी मार्मिक संवेदना व्यक्त की है। लेखिका के अपने शब्दों में 'यदि आज संसार में एक-दूसरे के लिए सहज सद्भावना एवं संवेदनाएँ होतीं है तो यह संसार इतना सहिष्णु और संवेदनहीन नही होता।'

वह यात्री अपनी बेटी ऋचा के साथ रोमानिया छुट्टियाँ मनाने जा रहा है। लेखिका के साथ अपनत्व का भाव होने पर अपने जीवन की सारी कहानी लेखिका को बता देता है कि कैसे ऋचा की माँ से उसकी शादी नहीं हुई किन्तु ऋचा उसकी बेटी है। ऋचा की माँ उससे गर्भवती हो जाती है। वह सर्कस की एक कलाकार है। उसके अपने कई सपने हैं, जिन्हें पूरा करने के लिए आतुर ऋचा के प्रति अपने कर्त्तव्य निभाने से इंकार करने के साथ-साथ विवाह करने से भी मना कर देती है। ऐसे में वह पिता होने के नाते ऋचा के प्रति अपने कर्तव्य से विमुख नहीं होता और अपनी माँ को कहता है कि " मैं मात्र वचनब्द्व ही नहीं था, मैं पिता था, जन्मदाता था, मेरी तरह, माँ की तरह, वह भी मानव थी। वह भ्रूण हत्या भी कर सकती थी पर उसकी भी संवेदनाएँ थी।"[9]

ऋचा के प्रति संरक्षण और वात्सभ्य भाव अपनी माँ के भीतर जगाने को लेकर वह सदैव प्रयत्नशील रहा। उसे पूर्ण विश्वास था कि उसकी माँ एक न एक दिन उसकी बच्ची को अवश्य स्वीकार करेगी।

'अभिशप्त' कहानी में लेखिका की भेंट एक आकर्षित व्यक्तित्व वाली युवती से होती है। वह युवती अपने माता-पिता की इकलौती संतान है। पिता की मृत्यु के पश्चात् माँ ने बड़े लाड़ प्यार से पालपोस कर बड़ा किया। माँ और गुरु की सलाह से वह रत्नमणि नामक लड़के से शादी कर लेती है। उसका जीवन सुख शांति से बीत रहा था कि एक दिन अयोध्या में बाबरी मस्जिद कांड में उसके पति की मृत्यु हो गई। " सांप्रदायिकता ने ऐसा नृशंस खेल खेला कि गली-गली रक्त की नदियाँ बहने लगीं। लाखों की तादाद में बहशी दरिंदों ने प्रदर्शनी-भवन पर धावा बोल दिया। क्षण भर में लूटपाट, आगजनी, गोला-बारी और नरसंहार का तांडव मेरा सौभाग्य-सिंदूर और माँ का एकमात्र पुत्र बर्बरता से लूट लिया गया।"[10]

कुछ साल बाद सास की चचेरी बहन के विदुर देवर से उसकी शादी करवा दी जाती है। वह आदमी उससे उम्र में बड़ा था और सोच उतनी ही छोटी। वह हमेशा उसे शक की नजर से देखता रहता। वह उसकी बच्ची को भी उससे मिलने नहीं देता था। अततः नायिका अपने पति और सौतेले बच्चों से अपमानित होकर सब कुछ छोड़-छाड़ कर अपनी माँ और अपनी बच्ची के वापस लौट आती है और नई जिन्दगी की शुरुआत करती है।

'दायरे' कहानी में बेमेल विवाह, दामपत्य जीवन के तनाव, अकेलेपन और पारिवारिक कलह कलेश को

चित्रित किया गया है। लेखिका की सहयात्री अपनी सहेली के जीवन की दुख भरी गाथा को सुनाना चाहती है। उसकी सहेली की शादी उसके पिता ने बिना उसकी मर्जी पूछे एक ऐसे लड़के से कर दी जो उसे शादी के बाद बरतानिया के शहर बैडफोर्ड ले आया। पति को अपनी पत्नी का दूसरे लोगों से मिलना-जुलना पसंद नहीं था। "उसके शहर को उसका बेपरवाह हुस्न, तराशा हुआ बदन और मिजाज की सादगी कुछ इस तरह पसंद आई कि उसे डर लगने लगा कि कहीं उसकी बीवी की इस मासूम फितरत को इस गैर मुल्क बरतानियां की हवा न लग जाए। इसलिए वह उसे आगे बढ़ने और गैर लोगों से मिलने-जुलने से रोकता रहा।"[11]

पति के इशारों पर जिन्दगी काटती बच्चों के होते हुए भी खुद को अकेला अनुभव करती जैसे-तैसे उसने एक दायरे में जिन्दगी जीना सीख लिया था। अपने दर्द को नज्में में पिरोती रहती काम के सिलसिले में पति के किसी दूसरे देश में जाने के बाद अपनी नज्मों को छपवाने के लिए एक प्रकाशक के संपर्क में आई तो उसने नजदीक आने की कोशिश की तो उसने कहा, "मैं पुराने वक्तों में पैदा हुई हूँ और मेरी तरबियत भी उन दिनों की है, मुझसे अनैतिक संपर्क की उम्मीद न रखें। मेरे कुछ दायरें हैं और मैं उन दायरों में रहने की आदी हूँ।"[12]

लेखिका के कहे अनुसार, 'मर्द को भूख थी जिस्म की और औरत को भूख थी एक अच्छे दोस्त की। दोनों की जरूरतों में जाती फर्क था।'

'सफर में' कहानी में रेलयात्रा के दौरान लेखिका की मुलाकात एक बाईस वर्षीय बेबस, लाचार और अत्यन्त दुखी किन्तु चेहरे पर मासूम सी मुस्कराहछ लिए शबनम नामक लड़की से होती है। ट्रेन में भीड़ अधिक होने के कारण लेखिका बेचैन थी। उसकी बेचैनी शबनम से छुपी न रही। शबनम उसके आराम से सोने का इंतजाम करवाती है। धीरे-धीरे भीड़ कम होने लगती है और लेखिका उन भीड़ के लोगों से जैसे-जैसे परिचित होती जाती है, उन लोगों के प्रति उसके मन में संवेदना उत्पन्न होने लगती है। शबनत के प्रति भी उसे अलग ही लगाव का अनुभव होता है। ट्रेन से उतरने से पहले अपना विजिटिंग कार्ड उसे देती है। कुछ दिनों के बाद शबनम का एक पत्र उसे प्राप्त होता है। जिसमें लिखा था,"जब तक आपको यह खत मिलेगा, मैं खुद कुशी कर चुकी होऊँगी। मेरी गोद की बच्ची का गला मेरे खाविंद ने घोंट दिया क्योंकि उस मासूम की शक्ल उससे नहीं मिलती थी। बड़ी बेटी को मैने मुमानी के पास भेज दिया पता लिख रही हूँ। आप जल्दी ही उसे किसी यतीमखाने में भेज दीजिए, जहाँ मेरा खाविंद उसे न पा सके। मेरे पेट का बच्चा अल्लाह के दरबार में उससे फरियाद करेगा।"[13]

लेखिका और शबनम एक-दूसरे के प्रति विश्वास ही था कि दुनिया से विदा लेते हुए शबनम को लेखिका ही एक मात्र सहारा जान पड़ रही थी। लेखिका भी उसके विश्वास पर खरी उतरी और उसकी लड़की की जिम्मेदारी उठाना अपना फर्ज समझा।

'समर्पिता' एक तितिक्षा नामक लड़की की कहानी है जो बेसहारा, बेबस और मानसिक रूप से अस्वस्थ थी। लेखिका की भेंट उससे तब होती है जब उसकी एक मित्र की माँ का एक्सीडेंट हो जाता है और उसे अपनी माँ की देखभाल के लिए जाना पड़ता है। जाने से पहले रत्ना अपनी इस मित्र को अपने मालिक और मित्र के घर रहने का इंतजाम कर देती है। तितिक्षा बहुत सुंदर, आकर्षण बैरोनेस थी। वह लेखिका का बहुत आदर-सम्मान करती है। वहीं लेखिका को उसके जीवन के विषय में बहुत सी बातें का पता चलता है कि किस प्रकार बैरोनस और तथागत के सहयोग से वह नैराश्य रोग से उभरती है और फिर वह एक स्कूल में पढ़ाने लगती है तथागत से शादी के बाद वह मानसिक और शरीरिक रूप से काफी मजबूत बन जाती है। तितिक्षा बेसहारा अनाथ बच्चों की देखभाल भी करती है और उन्हें शिक्षा प्रदान करने हेतु भी कार्य करती है। "कोई व्हील चेयर में, कोई बैसाखी लिये, कोई डगमगाता हुआ, कोई बर्फ पर बैठा हुआ सभी बर्फ के गोले बना-बनाकर एक-दूसरे पर फेंक-फेंककर हंस रहे थे। शोर मचा रहे थे और तालियां बजा रहे थे।"[14]

तितिक्षा ने अपना सारा जीवन इन बेसहारा अपाहिज बच्चों को समर्पित कर दिया था। अब यही उसका अपना परिवार था।

'शन्नो' कहानी एक स्त्री की कहानी है जिस पर अपनी सास और दो बच्चों की जिम्मेदारी है। उसका पति सुभाष उसे छोड़कर कहीं चला गया है। इस सबके लिए उसकी सास उसे ही उत्तरदायी मानती है घर चलाने के लिए उसे स्कूल में नौकरी करनी पड़ती है। सास की मृत्यु के बाद एक दिन सुभाष वापिस घर लौटता है और बहला-फुसला कर उन्हें अपने साथ लंडन ले जाता है। वहाँ जाकर बच्चे अपने-आप में मस्त हो जाते हैं और सुभाष को तो पहले भी शन्नो की कोई परवाह कहाँ थी। एक दिन बच्चों के साथ बहस के दौरान डाइनिंग टेबल का कोना उसके पेट में धस जाता है और उसे अस्पताल भर्ती करवाया जाता है। वहीं उसकी मुलाकात एक अन्य मरीज रोबर्टो से होती है जो कला से जुड़ा हुआ है और शन्नो की भी इस काम की ओर प्रोत्साहित करना है। मानव जीवन की अनेक समस्याओं, अकेलापन, दुख, संत्रास, आर्थिक तंगी इत्यादि का चित्रण करके लेखिका ने उनके प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की है। "शन्नो की आँख जब दुबारा खुली तो उसने सोनू और मौनू को अपने बिस्तर के पास विवीर्ण और दुखी चेहरे के साथ बैठे देखा। उसके हृदय में वात्सल्य का आवेग उमड़ा तो उसने दोनों के हाथ पकड़कर सीने पर रख लिये।"[15]

'तान्या दीवान' एक ऐसी लड़की की कहानी है जो बहुत ही पढ़ी-लिखी, स्वावलम्बी, व्यवहार कुशल है। माता-पिता से दूर रहकर लंडन में एक अच्छी नौकरी करने लगी थी। उसके माता-पिता उसके जीवन में कभी हस्तक्षेप नहीं करते थे किन्तु कभी-कभार उसे अपने मित्रों के साथ बाहर आने-जाने में सावधानी रखने की बात कह देते। वे चाहते थे कि उनकी इकलौती बेटी शादी करके अपना घर बसा ले किन्तु तान्या बात को अनसुना कर देती। वह कहती "ओह मम! यह आप क्या कह रही हैं। मेरे लाइफ स्टाइल में शादी की जगह कहाँ है। मुझे ठहराव नहीं चाहिए। मेरा तो एक पैर सदा हवाई जहाज में रहता है। मैं शादी का चक्कर नहीं पाल सकती हूँ।"[16]

लेखिका ने तान्या के माध्यम से ऐसी लड़कियों के प्रति संवेदना व्यक्त की है जो जिन्दगी में सारे ऐशो आराम तो कमा लेती है किन्तु जिन्दगी की असल सच्चाई को समझना नहीं चाहती।

उषा राजे सक्सेना की कहानियों में मानवीय संवेदना के विविध पक्षों का चित्रण हुआ है। इस संवेदना के पीछे स्वयं लेखिका का संवेदनशील व्यक्तित्व भी है। दूसरों की पीड़ा को अनुभव करना और उसको दूर करने का प्रयास भी उनकी कहानियों में परिलक्षित होता है। कहानी-संग्रह की सभी कहानियों के पीछे उषा राजे सक्सेना का व्यापक अनुभव है। 'ढेरों सामाजिक चैरिटेबल कार्य करना, समय-समय पर लंबी-लंबी पानी विश्वयात्रा पर निकलना, विश्व सभ्यता और संस्कृति के विविध पहलुओं को जानना और समझना, लंदन बोरो आफ मर्टन के स्कूलों में मनेविज्ञान पढ़ाना और हिन्दी के प्रचार-प्रसार में हमेशा कटिबद्ध होना ये सभी अनुभव उषा राजे सक्सेना के कहानी लेखन में देखे जा सकते हैं।' इनकी कहानियों में ब्रिटेन के हर वर्ग के आदमी के सुख-दुख, आशा-निराशा का वर्णन है। ब्रतानवी परिवेश में लिखी जाने के बाद भी इनमें मानवीय जीवन की ऊषमा और सहिष्णुता की कमी नहीं है। 'ये कहानियाँ पति-पत्नी, परिवार और स्वाध्याय के लिए इमानदार और संवेदनशील प्रतिबद्धता को बड़े महत्व के साथ रेखांकित करती हैं। विदेश की धरती पर महत्वाकांक्षी जीवन जीते हुए भी प्राच्य सोच और अवधारणाओं से विलग न होने की चेष्टा ही उषा राजे के कल्पित या सच्चे पात्रों की विशेषता है।' कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि उषा राजे सक्सेना की सभी कहानियाँ मानवीय संवेदना से ओत-प्रोत हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. उषा राजे सक्सेना, 'प्रवास में' अपनी बात, ज्ञान गंगा प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2007.
2. आप्टे, वामन शिवराज, संस्कृत-हिन्दी कोश, पृ.- 590.
3. अंजना संधीर (सं.) प्रवासी, आवाज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008.

4. उषा राजे सक्सेना, प्रवास में, पृ.- 17.
5. उषा राजे सक्सेना, प्रवास में, कहानी प्रवास में, पृ.- 20.
6. वही, पृ.- 23.
7. उषा राजे सक्सेना, कहानी 'शुकराना', पृ.- 30.
8. उषा राजे सक्सेना, कहानी 'यात्रा में', पृ.- 52.
9. उषा राजे सक्सेना, कहानी 'अभिशप्त', पृ.- 70.
10. उषा राजे सक्सेना, कहानी 'दायरे', पृ.- 80.
11. वही, पृ.- 87.
12. उषा राजे सक्सेना, कहानी 'सफर में', पृ.- 102-103.
13. उषा राजे सक्सेना, कहानी 'समर्पिता', पृ.- 114-115.
14. उषा राजे सक्सेना, कहानी 'शल्लो', पृ.- 130.
15. उषा राजे सक्सेना, कहानी 'शुकराना', पृ.- 3.
16. उषा राजे सक्सेना, कहानी 'तान्या दीवान', पृ.- 135.

•